जॉर्ज मोसेस हॉर्टन की अद्भुत कहानी

कवि

लेखन व चित्रांकन: डॉन टेट

भाषांतर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

नन्हे जॉर्ज को शब्दों से प्यार था। पर वह एक गुलाम था। मालिक के लिए घंटों काम करने को मजबूर जॉर्ज न तो स्कूल जा सकता था, न पढ़ना ही सीख सकता था।

पर जॉर्ज ने पढ़ना सीखने की ठान ली थी। गोरे बच्चों के पाठ सुन उसने अक्षर सीखे। तब उसने खुद को पढ़ना सिखाया। जो कुछ उसके हाथ लगता वह उसीको पढ़ता।

जॉर्ज को सबसे अच्छी लगती थी कविता। वह अपने मालिक के पशुओं की देखभाल करते समय मन ही मन छन्द रचता। वह अपनी रचनाओं को तब पढ़ कर सुनाता जब वह पास के कॉलेज में मालिक के खेतों में उगे फल और सब्ज़ियाँ बेचने जाता। कुछ ही समय में कॉलेज के छात्रों के बीच गुलाम कवि की खबर फैल गई। जल्द ही उसे अपनी कविताओं के ग्राहक भी मिलने लगे।

पर जॉर्ज था तो अब भी गुलाम ही। क्या वह कभी आज़ाद हो सकता था?

यह पुस्तक जॉर्ज मोसेस हॉर्टन की सशक्त जीवनी है, जो दक्षिण के पहले अफ्रीकी-अमरीकी कवि थे जिनकी रचनाएं प्रकाशित हुईं। विख्यात लेखक व चित्रकार डॉन टेट ने प्रतिभा और संकल्प की यह प्रेरणादायी व मर्मस्पर्शी कथा प्रस्तुत की है।

मेरी प्यारी माँ शैरन टेट को

और मेरे नाती-पोतों चार्ल्स,

कॉस्टेन आनिया और ज़ोई के लिए

जो सभी शब्दों से प्यार करते हैं

जॉर्ज मोसेस हॉर्टन की अद्भुत कहानी

कवि

लेखन व चित्रांकन: डॉन टेट

भाषांतर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
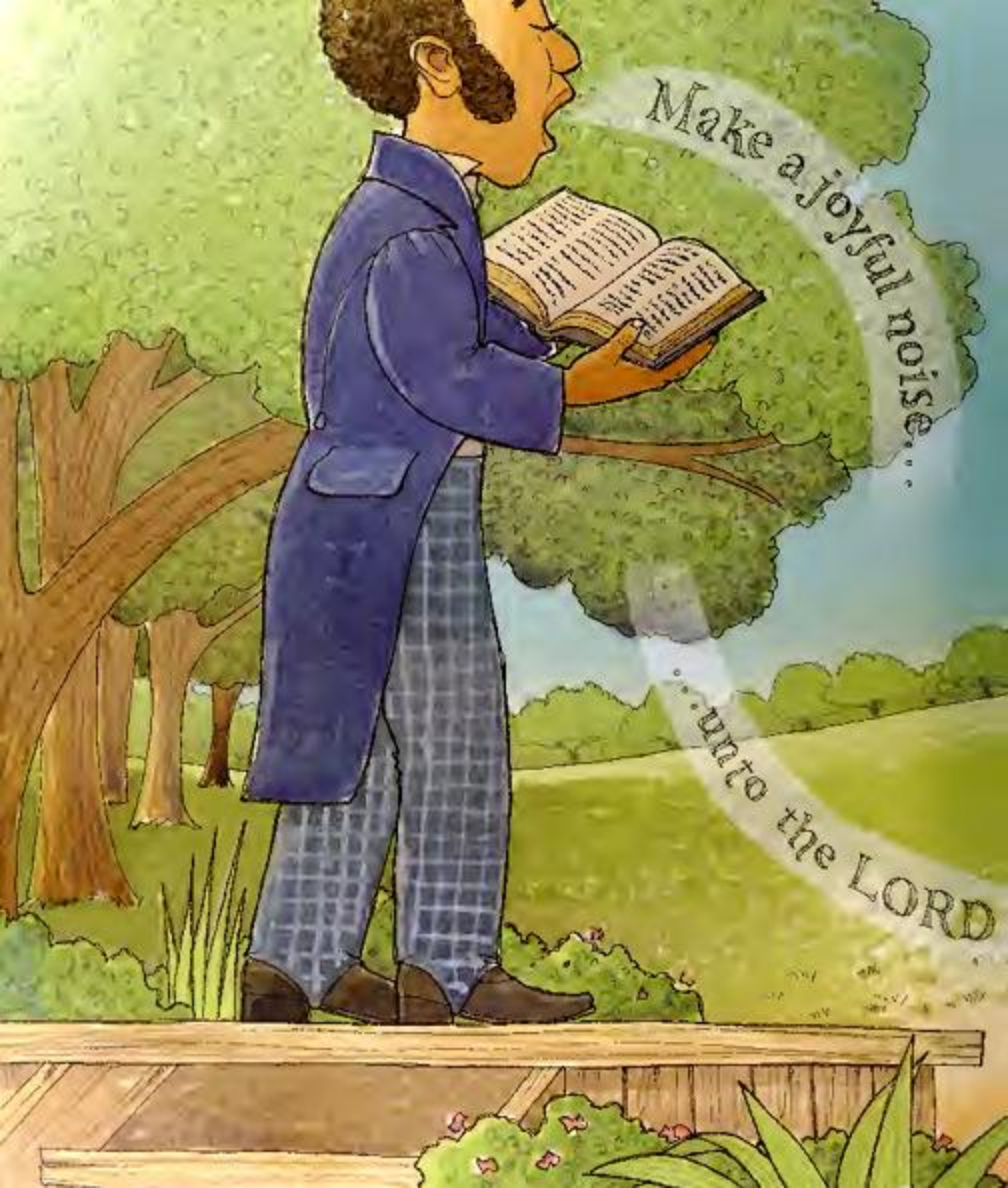
जॉर्ज को शब्दों से बेइन्तहा प्यार था। वह पढ़ना सीखना चाहता था। पर वह गुलाम था। वह अपने परिवार के साथ उत्तरी कैरोलाइना के चैटहैम काउन्टी में रहता था, जहाँ उससे घंटों मेहनत-मशक्कत करवाई जाती थी। कुछ और करने का समय ही नहीं बचता था। इसके अलावा जॉर्ज जानता था कि उसके मालिक को यह नापसन्द था कि कोई भी गुलाम पढ़ना सीखे।

इसके बावजूद नन्हा जॉर्ज अपने चारों ओर पसरी-फैली भाषा के सौन्दर्य से चकित होता। फिर चाहे वे बाइबल के प्रेरणादायी शब्द हों। पादरी के उपदेश में गुंथे आशा जगाने वाले शब्द हों। या गीतों में बुने जोश भरने वाले शब्द हों।
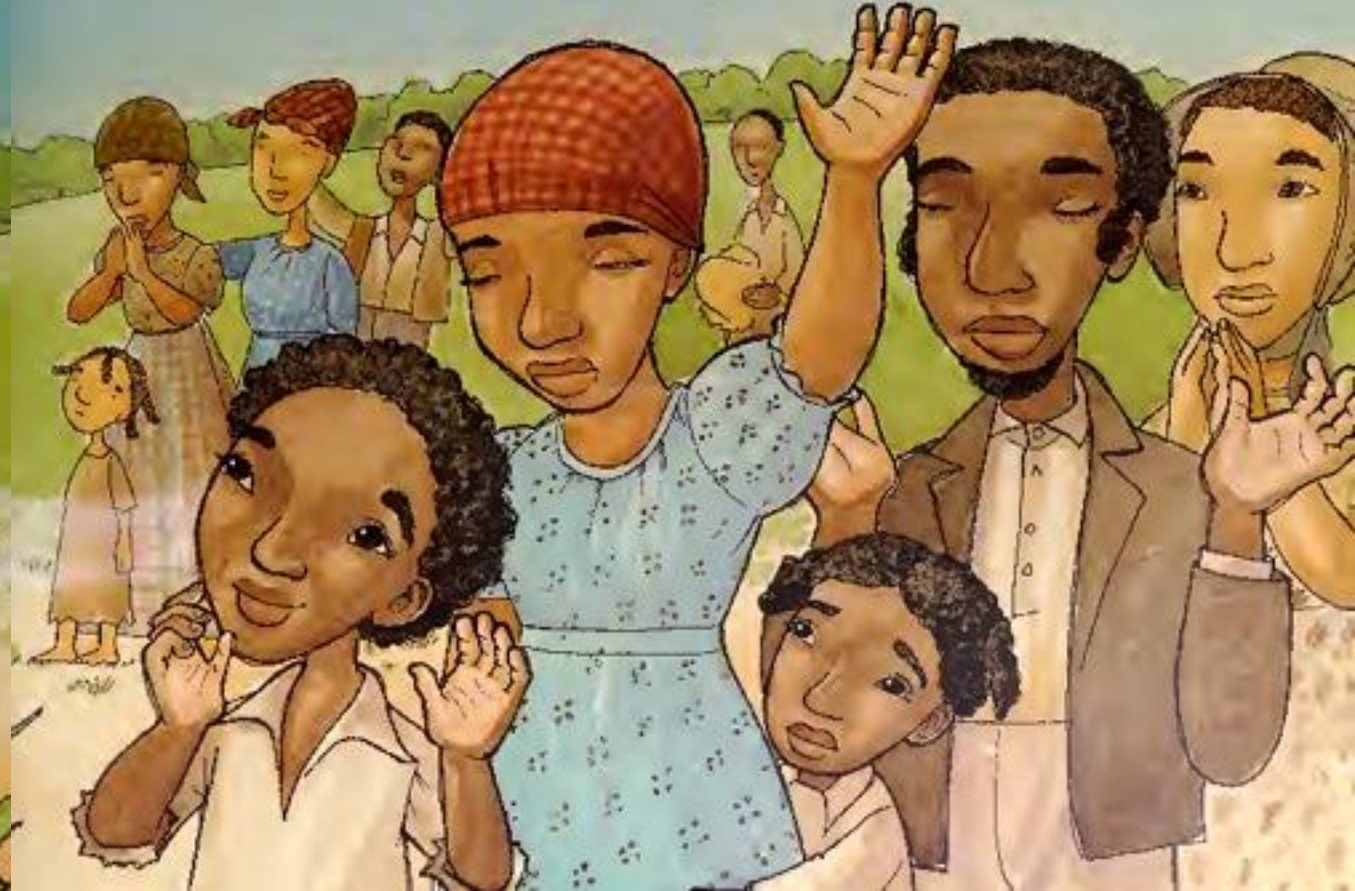
जॉर्ज ने पढ़ना सीखने का पक्का मन बना लिया। जब गोरे बच्चे अपनी किताबों को पढ़ते वह आस-पास मंडराता। वे जब वर्णमाला के अक्षर दोहराते, वह ध्यान से सुनता।

जल्द ही जॉर्ज ने पूरी वर्णमाला कंठस्थ कर ली।
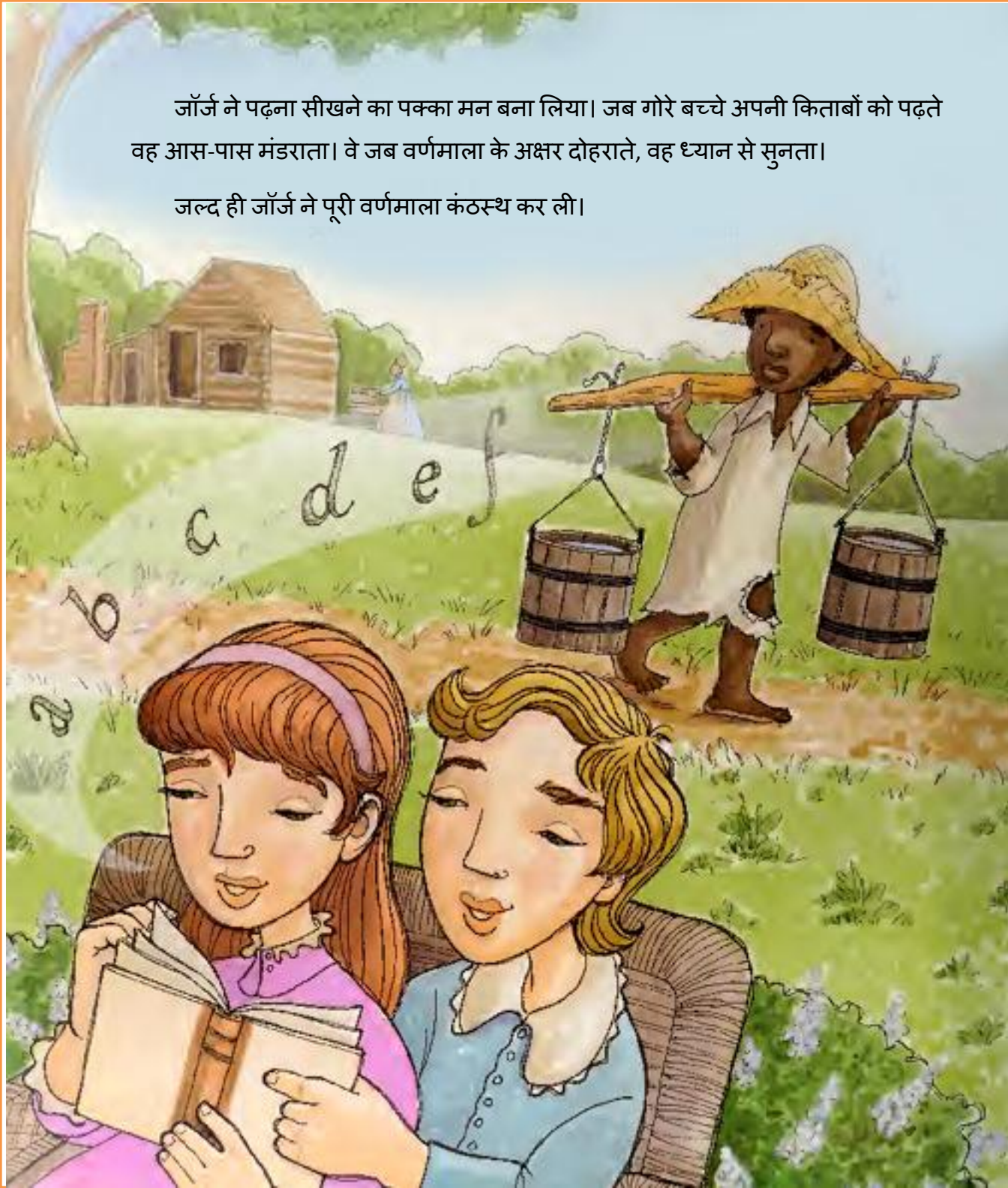
जॉर्ज की माँ उसकी मदद करना चाहती थी, पर वह भी लाचार थी। उसने जॉर्ज को अपनी सबसे बेशकीमती चीज़ सौंप दी। यह थी वैसली भजनावली।

जॉर्ज की पहली किताब यही भजनावली थी। वह उसके पन्ने उलट-पलट कर आखर और शब्द बाँचने की कोशिश करता। पर इसका कोई फायदा न होता। वह एक भी शब्द पढ़ नहीं पाता।

एक दिन जॉर्ज के हाथ हिज्जों की किताब लगी। थी तो वह फटी-पुरानी, उसके कई पन्ने गायब भी थे। पर जॉर्ज उसके ही सहारे पढ़ने की शुरूआत कर सका।

वह हिज्जों की इस किताब को उलटता-पलटता रहा, उसे कुछ अक्षर समझ आने लगे।

दिन भर हाड़तोड़ मेहनत करने के बाद जब रात को उसे आराम करना चाहिए था, जॉर्ज लकड़ियाँ जला पढ़ने की कोशिश करता। धुंए से उसकी आँखें चिरपिरातीं।

जल्द ही वह कुछ शब्द समझने लगा। तब पूरे के पूरे वाक्य समझने में उसे ज़यादा वक्त नहीं लगा।

यों धीमे-धीमे जॉर्ज ने खुद को पढ़ना सिखा ही लिया।

अब जॉर्ज को शब्दों से और प्यार हो गया। वह न केवल उन्हें पढ़ पाता बल्की उन्हें समझ भी पाता था। जॉर्ज बाइबल, न्यू टैस्टमैंट के छन्द पढ़ता। किताबें, अखबार में छपे लेख, इश्तहार, जो कुछ उसके हाथ लगता वह सब पढ़ जाता।

पर जॉर्ज को सबसे अच्छी लगती थी कविता।
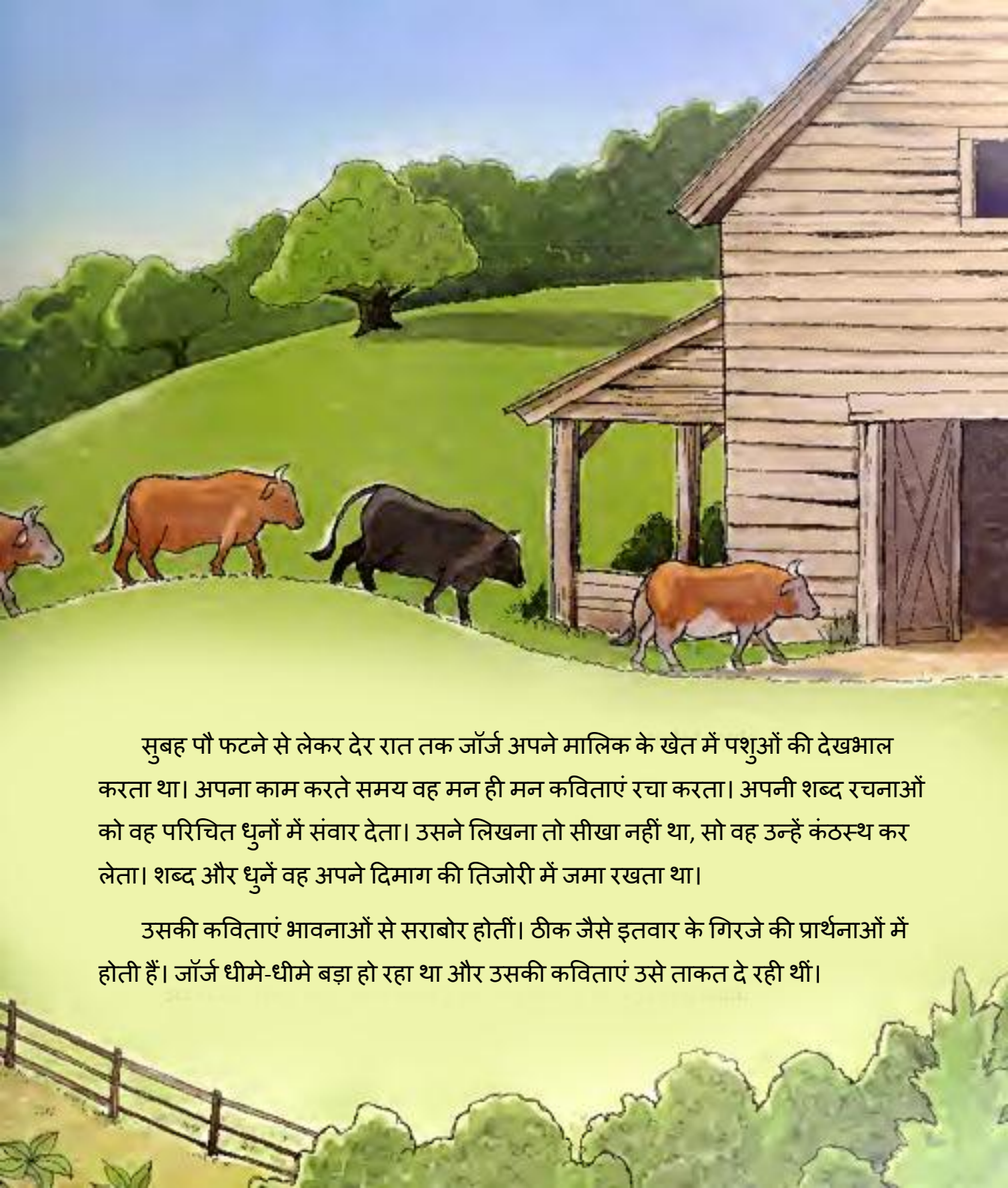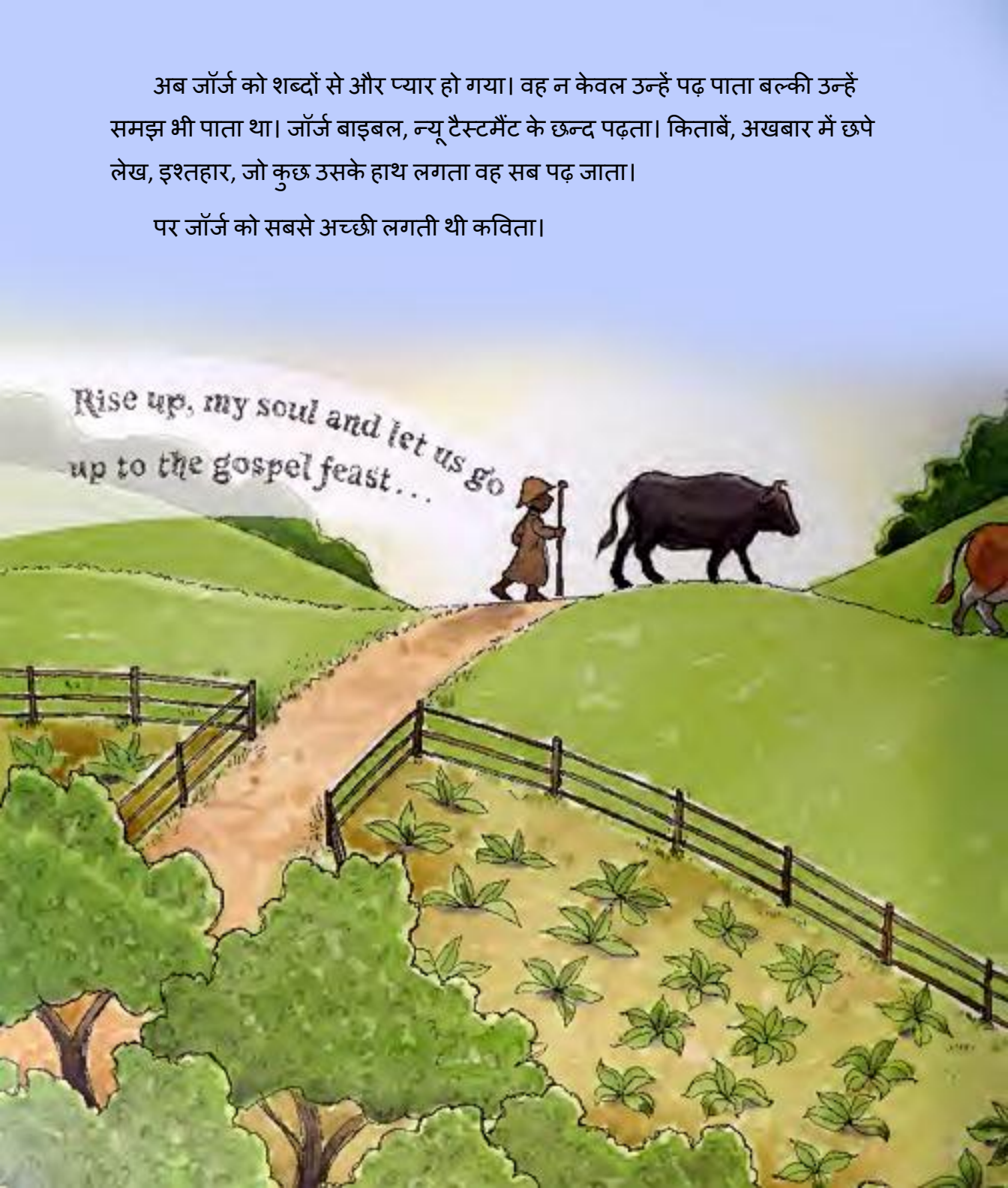
सुबह पौ फटने से लेकर देर रात तक जॉर्ज अपने मालिक के खेत में पशुओं की देखभाल करता था। अपना काम करते समय वह मन ही मन कविताएं रचा करता। अपनी शब्द रचनाओं को वह परिचित धुनों में संवार देता। उसने लिखना तो सीखा नहीं था, सो वह उन्हें कंठस्थ कर लेता। शब्द और धुनें वह अपने दिमाग की तिजोरी में जमा रखता था।

उसकी कविताएं भावनाओं से सराबोर होतीं। ठीक जैसे इतवार के गिरजे की प्रार्थनाओं में होती हैं। जॉर्ज धीमे-धीमे बड़ा हो रहा था और उसकी कविताएं उसे ताकत दे रही थीं।
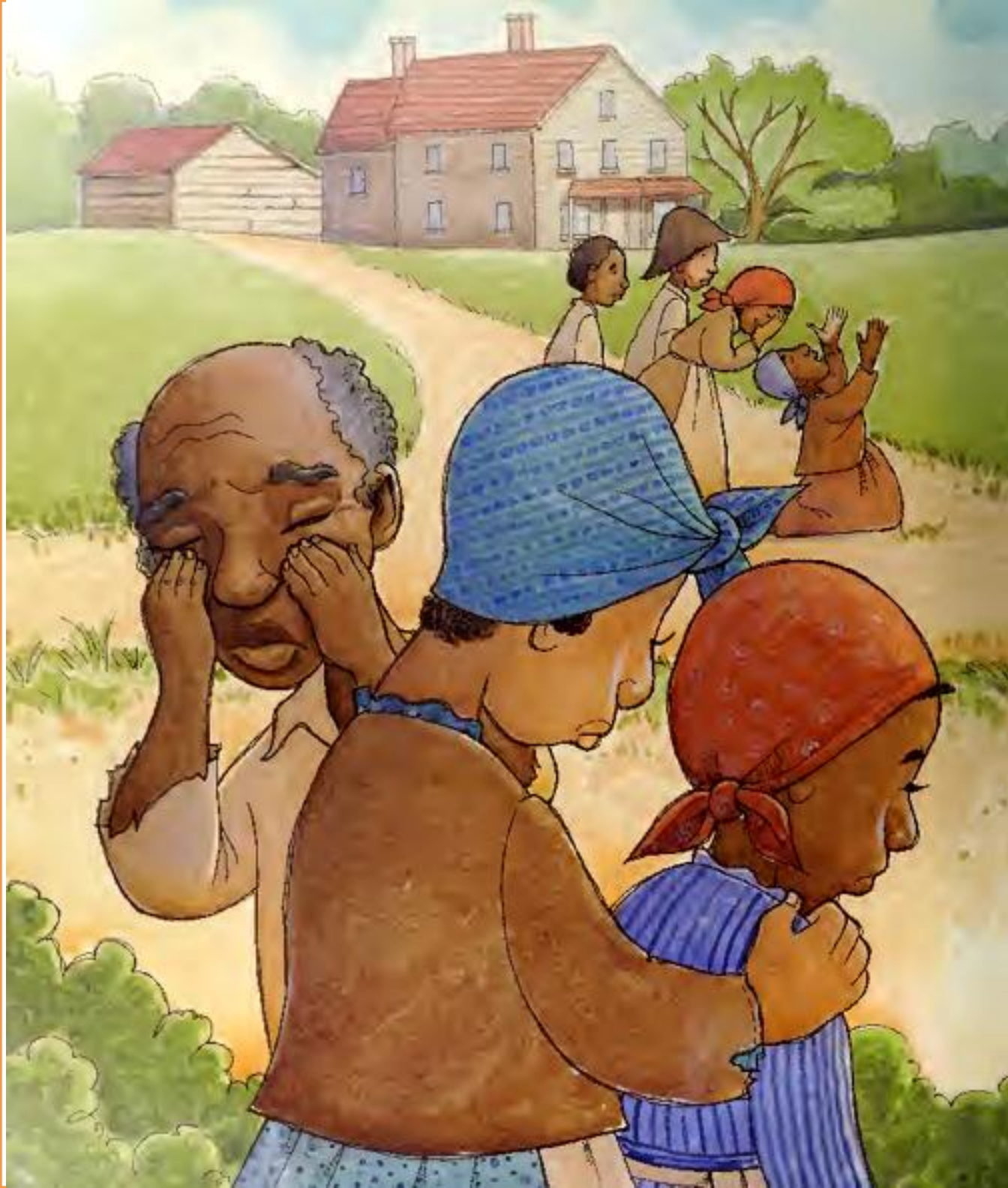
जब जॉर्ज सतरह साल का हुआ उसके मालिक ने अपनी संपत्ति का बंटवारा कर दिया। अपनी ज़मीन, पशु, घोड़ागाड़ियाँ, औज़ार अपने परिवार के सदस्यों में बांट दिए। गुलाम भी संपत्ति ही माने जाते थे, सो वे भी बांटे गए। यों जॉर्ज को अपने परिवार से जुदा होना पड़ा।

जॉर्ज को मालिक ने अपने बेटे को दे दिया। जॉर्ज को डर था कि वह अब कभी अपनी माँ, भाइयों और बहनों से नहीं मिल सकेगा।

अब जॉर्ज अपने नए मालिक के खेतों में मेहनत-मशक्कत करने लगा। काम कठिन था, पर हर इतवार को उसे कुछ राहत मिलती थी। उस दिन जॉर्ज आठ मील पैदल चल कर चैपल हिल नामक गाँव जाता था जहाँ उत्तरी कैरोलाइना विश्वविद्यालय का परिसर था। वहाँ वह छात्रों को मालिक के खेतों के फल और सब्ज़ियाँ बेचता था।

इतनी दूर पैदल चलना उसे कतई नहीं अखरता था। उसे तो निकल पाने का यह मौका रास आता था।

शुरुआत में कॉलेज के छात्र उसे छेड़ते, उसका मज़ाक उड़ाते। उनके अपमान से अपना ध्यान हटाने के लिए जॉर्ज ने अपनी कविताओं का पाठ करना शुरू कर दिया। उसकी ठेलागाड़ी में लदे मीठे फलों की तरह जॉर्ज के होठों से मीठे शब्द झरते।

जॉर्ज के सुरीले स्वर में निकलते उसके छन्दों का सुन हरेक की आँखें अचरज से फैल जातीं और मुँह खुले के खुले रह जाते। जब छात्रों को पता चला कि वे जॉर्ज की ही रचनाएं हैं वे हैरत में पड़ गए।

गुलाम कवि की खबर विश्वविद्यालय परिसर में तेज़ी से बहने वाली नदी की तरह पसर गई। कई लोग उसकी कविताएं सुनने आने लगे।

उनमें से कुछ छात्रों ने तय किया कि वे जॉर्ज की मदद करेंगे। उन्होंने उसे अपनी किताबें दीं। अंग्रेज़ी व्याकरण की किताबें, शब्दकोष। इतिहास और भाषण कला की किताबें। शास्त्रीय साहित्य और कविताओं की किताबें।

जॉर्ज ने इन सारी किताबों को यों आत्मसात् किया जैसे स्पंज पानी सोखता है।

एक दिन एक छात्र ने जॉर्ज से अपनी प्रेमिका के लिए एक कविता लिखने का अनुरोध किया। जॉर्ज ने उस युवती के लिए एक कविता रच दी। उसने छात्र को वह मुँह-ज़बानी सुनाई और उसने सुन्दर अक्षरों में उसे कागज़ पर उतार ली।

जब युवती ने वह कविता पढ़ी वह विभोर हो गई।

इसके बाद दूसरे छात्र भी जब-तब जॉर्ज से कविताओं की मांग करने लगे। वे इन कविताओं के बदले पैसे देने को तैयार थे।

जॉर्ज सप्ताह में दर्जन भर कविताएं रचता और उन्हें पच्चीस सेंट की दर पर बेचता। कुछ छात्र पैसों के बदले कविता की कीमत बढ़िया कपड़ों और जूतों के रूप में चुकाते। कुछ ही समय में जॉर्ज भी छात्रों की ही तरह चुस्त-दुरुस्त कपड़ों में नज़र आने लगा।

पैसों, अच्छे कपड़े और अपने नए दर्जे के चलते जॉर्ज खुद को इतना आज़ाद महसूस करने लगा जितना पहले कभी न किया था।

पर जॉर्ज आज़ाद नहीं था वह अपने मालिक की मिल्कियत भर था। वह अब भी सप्ताह भर खेतों में मज़ूरी करता और इतवार के दिन चैपल हिल जाता।

गुलाम कवि की कहानी एक प्रोफेसर की पत्नी ने भी सुनी। कैरोलाइन ली हैन्त्ज़, खुद भी एक पेशेवर लेखिका थीं और प्रकाशित कवि भी। वे जॉर्ज की कविताओं से बेहद प्रभावित हुईं। जॉर्ज की कुछ कविताओं ने उन्हें मुस्कुराने पर बाध्य किया तो कुछ ने रुलाया।

वे जॉर्ज से मिलीं और उसे अपनी कविताएं खुद कागज़ पर कलम से लिखना सिखाया। इतने सालों से कविताएं कंठस्थ करने के बाद अब जॉर्ज उन्हें लिख सकता था।

कैरोलाइन ने मैसेच्युसैटस् राज्य में अपने शहर लैंकैस्टर के अखबार गैजेट में जॉर्ज की कुछ कविताएं छपने की व्यवस्था कर दी। अब जॉर्ज एक प्रकाशित कवि बन गया।

उसकी कविताओं में गुलामी का विरोध था। किसी दूसरे अमरीकी गुलाम ने इसके पहले विरोध का स्वर नहीं उठाया था।

जल्द ही जॉर्ज की रचनाएं दूसरे अखबारों में भी छपने लगीं। इन अखबारों में फ्रीडम्स् जर्नल भी शामिल था, जो देश का पहला ऐसा अखबार था जिसका मालिक अफ्रीकी-अमरीकी व्यक्ति था।

जॉर्ज को खुद पर फक्र हुआ, वह फूला न समाया।

अपने लेखन और छुटपुट कामों से होने वाली आमदनी से जॉर्ज अपने मालिक को अपने समय की कीमत अदा करने लायक हो गया। अब वह चैपल हिल में रहने लगा और कविताएं रचने में व्यस्त हो गया। अपने मालिक के साथ उसने जो व्यवस्था की थी वह गैर-कानूनी थी पर उसके मालिक को इसकी परवाह नहीं थी।
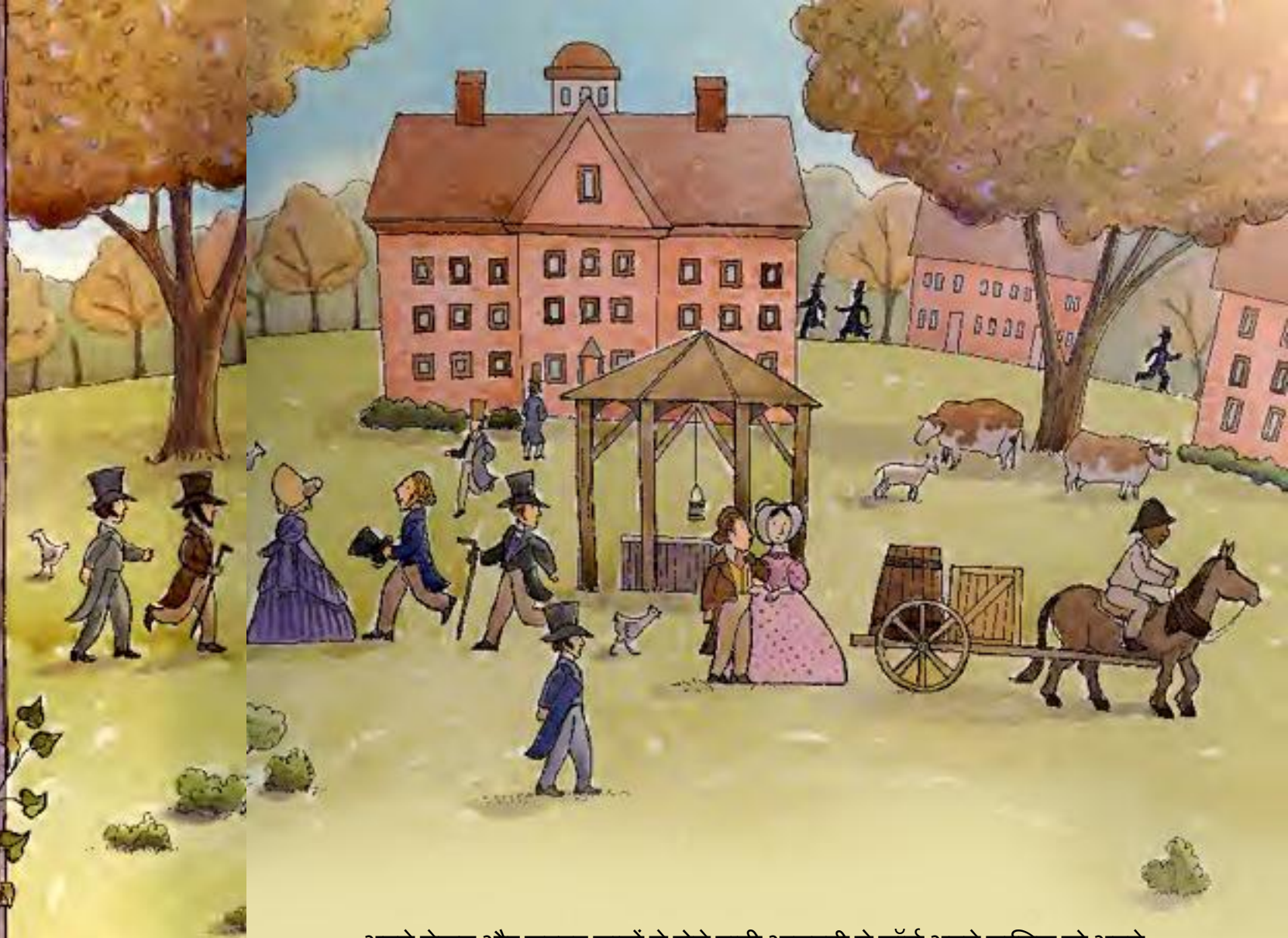
अब जॉर्ज पूर्ण कालिक लेखक था, पर आज़ाद वह अब भी नहीं था।

कुछ समय बाद जॉर्ज की पहली किताब *द होप ऑफ लिबर्टी* यानी *मुक्ति की उम्मीद,* छपी। जॉर्ज अपनी आय से अपनी आज़ादी खरीदना चाहता था।

जब फ्रीडम्स् जर्नल के संपादकों को उसकी योजना का पता चला उन्होंने उसकी मदद के लिए पैसे इकट्ठा करने की कोशिश की। कई प्रभावशाली लोग इस मुहिम में जुड़े - खबरनवीस, एक कॉलेज के अध्यक्ष, एक गवर्नर - सबने काफी पैसे देने का वादा किया। पर जॉर्ज के मालिक ने अपने बेशकीमती गुलाम को बेचने से इन्कार कर दिया।
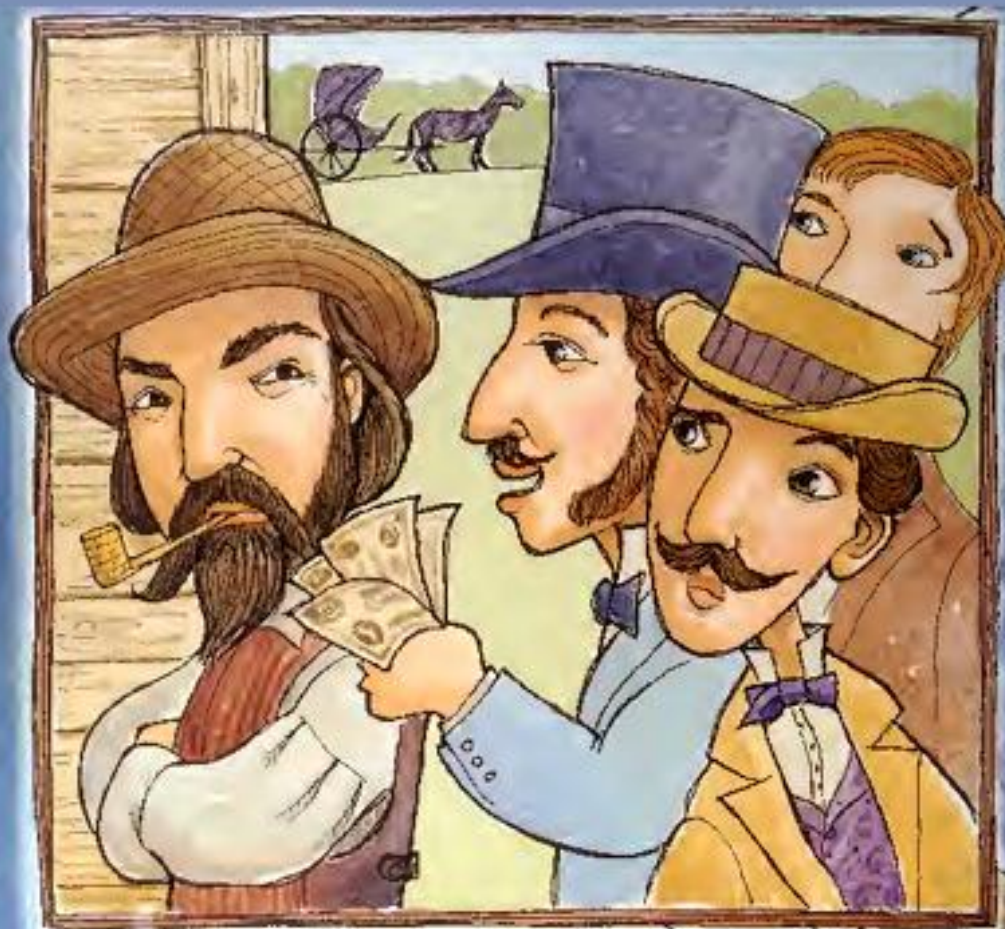
जॉर्ज हताश हो गया।

इस बीच उत्तर के सुधारवादी लोग दासप्रथा खत्म करने के काम में जुटे थे। उन्होंने तमाम पोस्टर और पर्चे छापे और बांटे। दक्षिण के गुलामों को ललकारा। उनसे कहा कि वे अपने मालिकों के खिलाफ उठ खड़े हों। जो गलाम पढ़ना जानते थे उन्होंने ये संदेश दूसरे गलामों तक पहुँचाए।
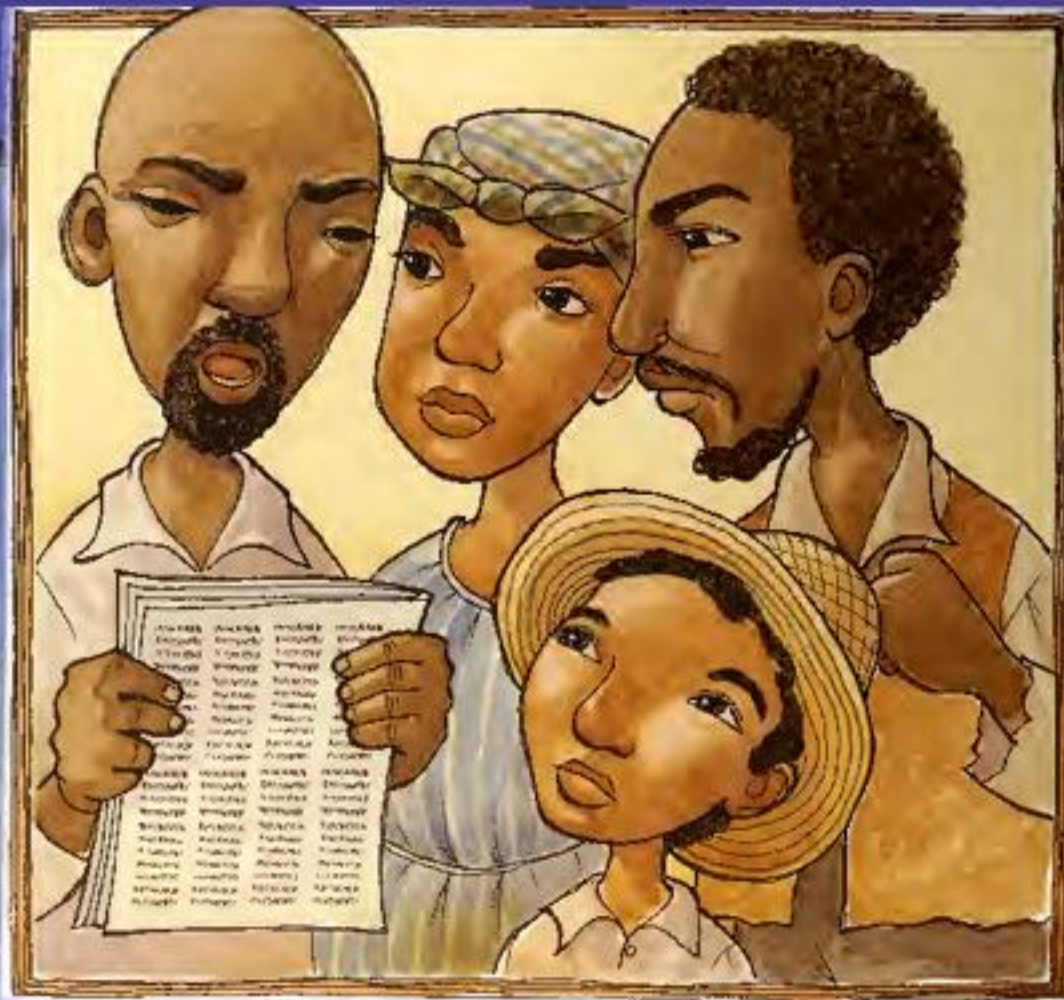
नतीजतन कई गुलामों ने विरोध की आवाज़ उठाई। कुछ ने तो अपने मालिकों की हत्या तक कर दी। समूचे दक्षिण में भय पसर गया।

उत्तरी कैरोलाइना में नए और सख्त कानून बनाए गए। जिन लोगों ने दासप्रथा विरोधी सामग्री छापी थी उन्हें सज़ा दी गई। पर सबसे खराब नतीजा यह रहा कि किसी गुलाम को पढ़ना-लिखना सिखाना गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।

गुलामी के विरोध में कविताएं रचना जॉर्ज के लिए खतरनाक हो चुका था।

पर उसने लिखना पूरी तरह बन्द नहीं किया। उसकी दूसरी किताब छपी। *द पोलिटिकल वर्क्स ऑफ जॉर्ज एम. हॉर्टन* में जीवन, प्रेम, मृत्यु और मित्रता पर कविताएं शामिल थीं।

1861 में उत्तर और दक्षिण के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया। युद्ध का मूल मसला था दासप्रथा। अधिकतर छात्र दक्षिण की रक्षा के लिए लड़ने चले गए।

चैपल हिल के विश्वविद्यालय परिसर में जॉर्ज की कविताओं के खरीददार इतने कम हो गए कि वह अपने मालिक को अपने समय के लिए पैसे अदा नहीं कर सकता था। सो उसे मालिक के खेत में मज़दूरी करने वापस लौटना पड़ा।
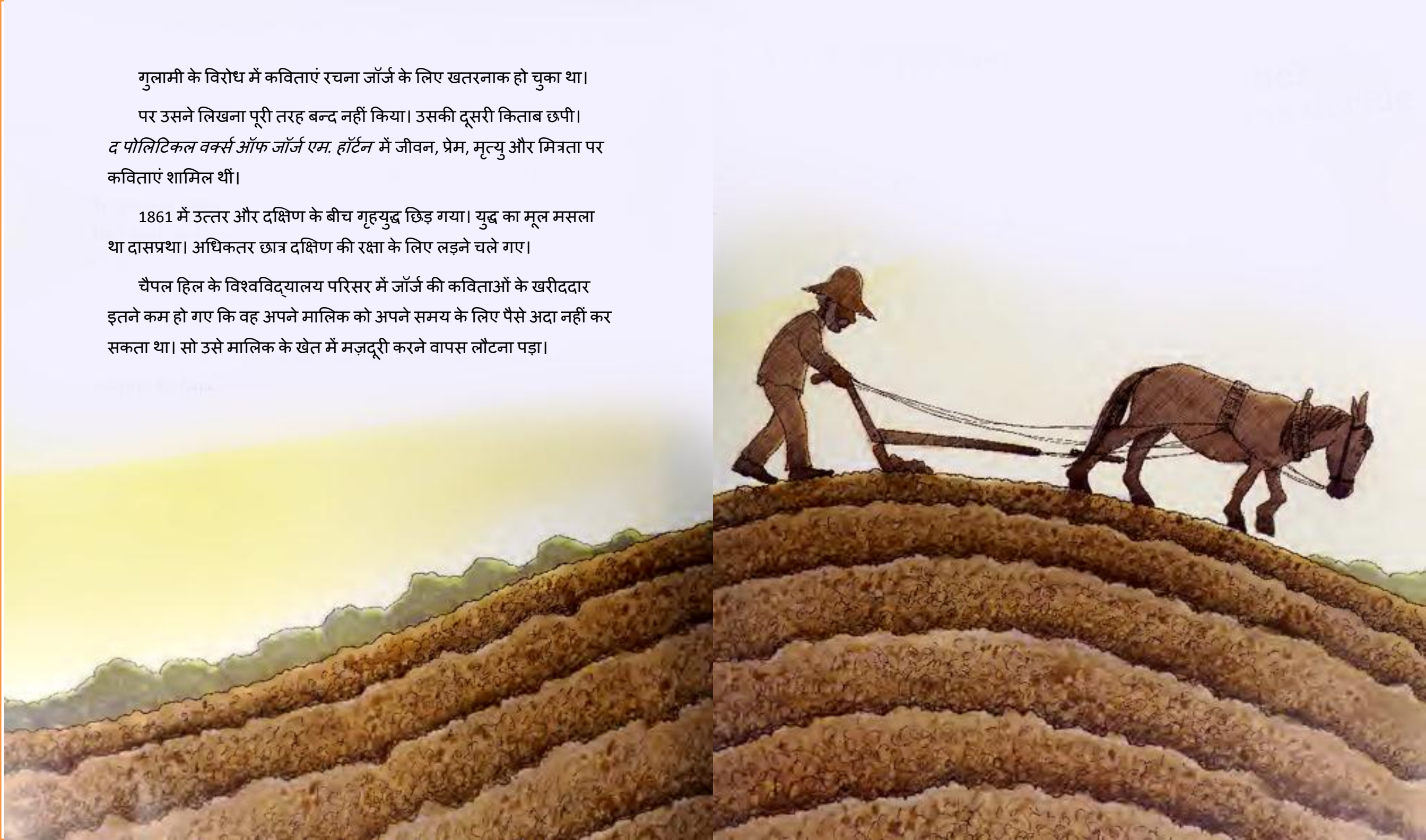
गृहयुद्ध चार वर्षों तक खिंचा। 1863 में राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने मुक्ति घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर कर देश को नई दिशा दी।

आखिरकार छियासठ साल की उम्र में जॉर्ज सचमें आज़ाद हो सका।

आज़ाद होने के बाद उसके लिए मालिक के खेत में रहना ज़रूरी नहीं था। उस बसन्त उसने अपने कलम और कागज़ समेटे और सफर पर निकल चला।

वह संघीय सेना के साथ पश्चिम की ओर बढ़ा। ज़रूरत पड़ने पर वह राह में ही पड़ाव डाल लेता। कुछ समय ठहरता, सुस्ताता, तब आगे बढ़ जाता।

उसने अपनी यात्राओं, अपने बिछड़े परिवार और दोस्तों, अपने लम्बे जीवन के विविध अनुभवों के बारे में कविताएं रचीं।
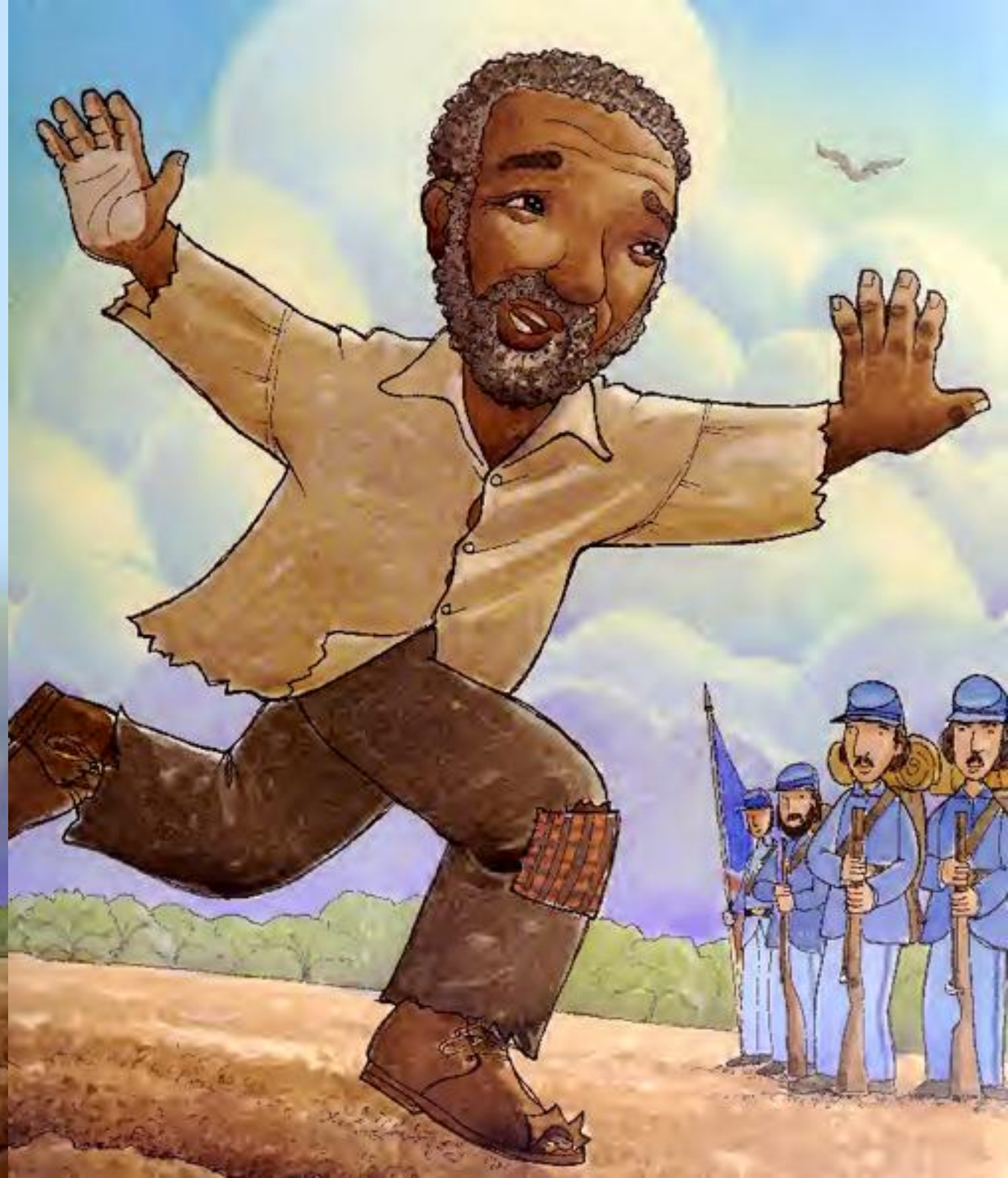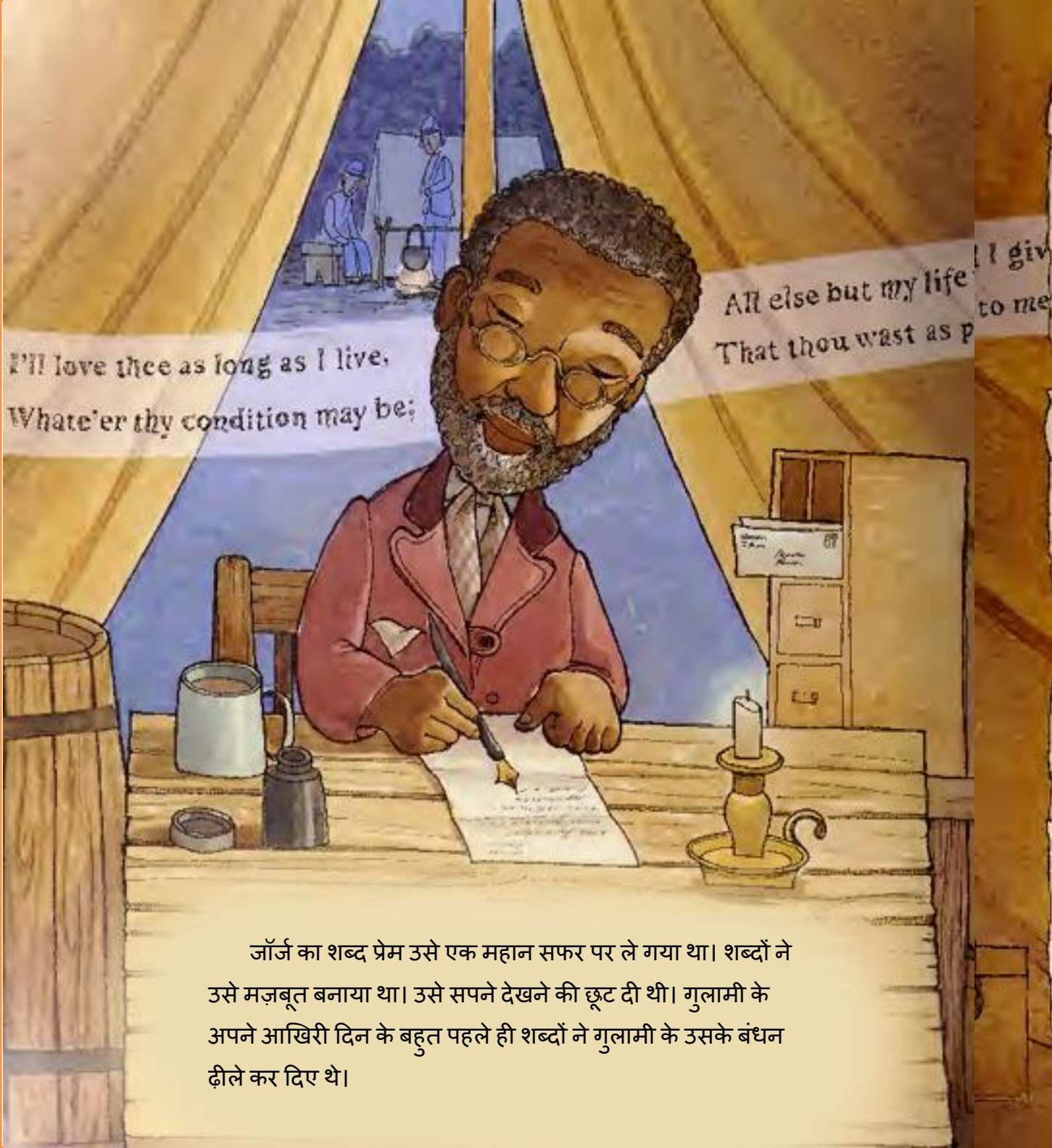
जॉर्ज का शब्द प्रेम उसे एक महान सफर पर ले गया था। शब्दों ने उसे मज़बूत बनाया था। उसे सपने देखने की छूट दी थी। गुलामी के अपने आखिरी दिन के बहुत पहले ही शब्दों ने गुलामी के उसके बंधन ढ़ीले कर दिए थे।

इस किताब को लिखने के लिए जब मैं शोध कर रहा था मुझे नीचे सूची में दर्ज किताबों और वेबसाइटों से काफी मदद मिली।   - डी.टी.

हॉर्टन, जॉर्ज मोसेस, *नेकेड जीनियस,* चैपल हिल, एन सी, द चैपल हिल हिस्टौरिकल सोसायटी, 1982

हॉर्टन, जॉर्ज मोसेस, *द पोलिटिकल वर्क्स ऑफ जॉर्ज एम हॉर्टन द कलर्ड बार्ड ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना टु विच इज़ प्रीफिक्स्ड द लाइफ ऑफ द ऑथर रिटन बाय हिमसैल्फ, जॉर्ज हॉर्टन,* हिल्सबरो, एनसीडी हार्ट, 1845।

यह पुस्तक नॉर्थ कैरोलाइना विश्वविद्यालय, चैपल हिल की वेबसाइट 'डाक्युमेंटिंग द साउथ से निःशुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

शरमन, जोन आर (संपादित), द ब्लैक बार्ड ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना: जॉर्ज मोसेस हॉर्टन एण्ड हिज़ पोएट्री, चैपल हिल, एनसी, द युनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना प्रेस, 1997

वॉल्सर, रिचर्ड, *द ब्लैक पोएट: बीईंग द रिमार्केबल स्टोरी, पार्टली टोल्ड बाय माय(एवमेव) हिमसैल्फ, ऑफ जॉर्ज मोसेस हॉर्टन, अ नॉर्थ कैरोलाइना स्लेव,* न्यू यॉर्क: फिलोसॉफिकल लाइब्रेरी इन्कॉरपोरेटेड, 1966

वॉल्सर, रिचर्ड तथा जूलिया, मोंटोगोमरी स्ट्रीट, *नॉर्थ कैरोलाइना परेडस: स्टोरीस् ऑफ हिस्ट्री एण्ड पीपल,* चैपल हिल, द युनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना प्रेस, 1966

विलियम्स, हैदर आंद्रिया, *सैल्फ टॉट: एफ्रिकन अमेरिकन एज्युकेशन इन स्लेवरी एण्ड फ्रीडम,* चैपल हिल, द युनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना प्रेस, 2005

द नॉर्थ कैरोलाइना स्टोरी: अ वर्च्युल म्यूज़ियम ऑफ युनिवर्सिटी हिस्ट्री, द युनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना एट चैपल हिल।

जॉर्ज मोसेस हॉर्टन की कविताओं के कई उद्धरणों का उपयोग इस पुस्तक के चित्रण और कला सज्जा में किया गया है। उनकी कविताएं अब सार्वजनिक क्षेत्र में अपने समग्र रूप में उपलब्ध हैं। आप उन्हें ऑनलाइन तलाश सकते हैं।

लेखक की ओर से

जब मैंने बच्चों की किताबों के लिए चित्र बनाने शुरू किए, मैंने तय किया कि मैं गुलामी के विषय पर लिखी गई किताबों पर काम नहीं करूंगा। इस निर्णय के कई कारण थे, जिनमें एक यह था कि मैं आज के तरुण पाठकों के लिए सार्थक समसामयिक कहानियों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता था। पर सच कहूँ तो मैं दरअसल यह स्वीकार ही नहीं करना चाहता था कि मुझे यह विषय शर्मिन्दा करता था।

मैं मध्य-पश्चिम के एक छोटे से कस्बे में 1970 और 80 के दशक में पला-बढ़ा था। गोरे चेहरों के विशाल समुद्र के बीच अमूमन मैं ही भूरे चेहरे वाला बच्चा था। मुझे लगता यह था कि जब भी काली कौम के इतिहास का मसला उठता उसका संबंध हमेशा गुलामी से होता - कि एक समय में काले लोग गोरों की मिल्कियत होते थे, वे उतने ही इन्सान माने जा सकते थे जितना कोई घोड़ा या ठेलागाड़ी। कई बार गोरे बच्चे इस बारे में मज़ाक कर ठिठियाते। और तो और खुद काले बच्चे भी ठीक यही करते थे।

पर जैसे-जैसे मैं अपने पेशे में आगे बढ़ा गुलामी के विषय से जुड़ी किताबों के चित्रण के प्रस्ताव मेरे पास आने लगे। पहले-पहल मैं हिचकिचाता रहा। पर जब मैंने इन कहानियों को पढ़ा, अपनी कौम के इतिहास को जाना, मेरी सोच बदलने लगी। मैंने तय किया कि इसमें शर्मिन्दा होने के कोई बात है ही नहीं, बल्की फक्र की बात है।

मुझे इन कथाओं से प्यार हो चला जो अफ्रीकी-अमरीकी कौम की जिजीविषा को दर्शाती थीं। हालांकि मैं यह भी मानता था कि प्रकाशन उद्योग गुलामी के विषय पर पुस्तकें छापने के साथ अन्य विषयों पर भी किताबें छाप सकता था जो अफ्रीकी-अमरीकियों के जीवन को छूती हों - फिर भी जिन लोगों ने गुलामी झेली थी उनकी कथाएं सुनी जाने योग्य थीं।

जब मेरे एक लेखक मित्र ने सुझाया कि मैं जॉर्ज मोसेस हॉर्टन के बारे में लिखूँ, तो मेरी जिज्ञासा फौरन जगी। अपनी शोध करते समय मैंने उनकी आत्मकथा *'द लाइफ ऑफ द ऑथर रिटन बाय हिमसैल्फ'* से बहुत कुछ पाया। यह एक संक्षिप्त व प्रेरक वृत्तान्त है जो उनके जीवन की मुख्य घटनाओं को समेटता है। पर इसने मेरे मन में अनेक सवाल उठाए, जो मुझे लगातार कचोटते रहे।

जॉर्ज मोसेस हॉर्टन ने खुद को पढ़ना सिखाया, कॉलेज के छात्रों को अपनी कविताएं बेचीं, और कई किताबें प्रकाशित कीं - यह सब उस युग में जब अफ्रीकी-अमरीकियों के बीच साक्षरता को न केवल हतोत्साहित किया जाता था बल्की वह गैर-कानूनी थी। तो फिर जॉर्ज यह सब कैसे हासिल कर सके?

हॉर्टन की उपलब्धियों की बेहतर समझ बनाने के लिए मुझे उत्तरी कैरोलाइना की दासप्रथा की खासियतों का अध्ययन करना पड़ा। मैंने जाना कि दक्षिण के अन्य भागों से यहाँ स्थितियाँ अलग थीं। दक्षिण के दूसरे राज्यों की तुलना में उत्तरी कैरोलाइना में आज़ाद हो चुके गुलामों की संख्या सबसे अधिक थी। यहाँ के कई लोग दासप्रथा विरोधी संगठनों को और गुलामों की आज़ादी को समर्थन देते थे। साथ ही यहाँ के खेत-जोत छोटे आकार के थे जिनमें कम मज़दूरों की ज़रूरत पड़ती थी, और कम सम्पन्न खेत मालिक अपने गुलामें के साथ खुद भी खेतों में खटते थे। यह अजीब लग सकता है, पर कई बार गुलामों को भी परिवार का ही सदस्य भी माना जाता था। इसमें शक नहीं कि हॉर्टन को इस खुले वातावरण से फायदा हुआ होगा।

पर इन अंतरों के बावजूद एक गुलाम का जीवन उत्तरी कैरोलाइना में भी आसान नहीं था। वे दिन भर बिना वेतन पाए, कमर-तोड़ मशक्कत करते थे। उनका भोजन, जो मालिक उपलब्ध करवाता था घटिया और ज़रूरत से कम होता था, और कपड़े अपर्याप्त। मालिक की इच्छा से परिवार तोड़ दिए जाते थे और गुलामों को कभी भी बेचा जा सकता था। और ऐसा होने पर वे फिर कभी एक-दूसरे से मिल तक नहीं सकते थे, जैसा जॉर्ज के साथ भी हुआ था। इन बाधाओं की पृष्ठभूमि में हॉर्टन की उपलब्धियाँ विलक्षण लगती हैं।

1831 में पास ही स्थित वर्जिनिया में गुलाम विद्रोह के दौरान पचपन गोरों को मार डाला गया। इस घटना के साथ ही उत्तरी कैरालाइना का नज़रिया बदल गया। साक्षर गुलाम, जो दासप्रथा विरोधी गतिविधियों के बारे में पढ़ सकते थे और दूसरों को जानकारी दे सकते थे, अब एक खतरा थे। उत्तरी कैरोलाइना में नए कानून बनाए और लागू किए गए। किसी भी गोरे या काले व्यक्ति द्वारा किसी गुलाम को पढ़ना-लिखना सिखाना गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया। इस कानून को तोड़ने वाले गोरे व्यक्ति को जुरमाना देना पड़ता था; पर काले व्यक्ति को, फिर चाहे वह गुलाम हो या आज़ाद, उन्चालीस तक कोड़े लगाए जा सकते थे।

ज़ाहिर है कि यह समय हॉर्टन के लिए संकट का था क्योंकि उनकी रचनाओं में अक्सर गुलामी का मुखर विरोध होता था। पर उन्होंने लिखना जारी रखा और अपनी दूसरी पुस्तक - *द पोलिटिकल वर्क्स ऑफ जॉर्ज मोसेस हॉर्टन* - प्रकाशित की। पर इसमें उन्होंने गुलामी, आज़ादी की आशा जैसे विषय नहीं उठाए।

गृहयुद्ध समाप्त होने पर हॉर्टन अंततः अपनी आज़ादी पा सके। 1865 में उन्होंने अपनी कविताओं की तीसरी किताब - *नेकेड जीनियस* - प्रकाशित की। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में वे फिलैडेल्फिया में जा बसे जहाँ उन्होंने बाइबल की कथाओं पर आधारित संक्षिप्त वर्णन लिखे और उन्हें विभिन्न पत्रिकाओं और सनडे स्कूल की पत्रिकाओं को बेचे। उनकी मृत्यु संभवतः 1883 में हुई, हालांकि सही तिथि किसीको ज्ञात नहीं है। हम यह भी नहीं जानते कि वे दरअसल कैसे दिखते थे, हालांकि इन्टरनेट पर आपको कई चित्र मिलेंगे जिनके लिए दावा किया जाता है कि वे हार्टन के चित्र हैं। फिर भी उनका कोई भी प्रामाणिक चित्र अनुपलब्ध है।

इस पुस्तक को रचते समय मेरा लक्ष्य यह था कि मैं गुलामी के विषय को एक असहज करने वाले शब्द से परे ले जाकर उस प्रस्तुत कर सकूँ। मैं चाहता था कि मेरे पाठक जॉर्ज मोसेस हॉर्टन को जानें, यह भी समझें कि आज उनके जीवन में हॉर्टन की क्या सार्थकता है।

हॉर्टन के युग में अफ्रीकी-अमरीकी साक्षरता असामान्य होने के साथ ही गैर-कानूनी भी थी। आज देखें तो अफ्रीकी-अमरीकियों की साक्षारता की दरें उस समय की तुलना में काफी अधिक हैं। फिर भी आँकड़े साफ दर्शाते हैं कि कई अफ्रीकी-अमरीकी छात्र हाई स्कूल पूरा कर लेने के बावजूद प्रभावी रूप से निरक्षर ही रह जाते हैं। अर्थात् वे ठीक से पढ़-लिख नहीं सकते। कई मायनों में हमारी कौम के लिए साक्षरता आज भी उतना ही बड़ा मसला है जितना वह हॉर्टन के समय में था।

उम्मीद करता हूँ कि तरुण पाठक जॉर्ज मोसेस हॉर्टन की कहानी में खुद को देख सकेंगे। एक ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति के रूप में जिसकी अपनी उम्मीदें हैं, अपने सपने हैं और जो मुक्त होने की इच्छा रखता है, ठीक हॉर्टन की ही तरह।

आभार

इस पुस्तक की शोध प्रक्रिया के दौरान सहायता के लिए मैं अर्ल एल. ईजेम्स, संग्रहाध्यक्ष, म्यूज़ियम ऑफ हिस्ट्री मैट कारकुट, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरीस्, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना, चैपल हिल विल्सन लाइब्रेरी, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना, चैनल हिल तथा ग्रैगरी टेलर, पूर्व संग्रहाध्यक्ष, हिस्टॉरिक होप प्लान्टेशन, विन्डसर, नॉर्थ कैरोलाइना का आभारी हूँ।

मेरी अद्भुत संपादक केथी लैण्डव्हेयर का शुक्रिया, जिनक पैनी दृष्टि, हाज़िर जवाबी और दिशादर्शन ने पुस्तक की रचना प्रक्रिया को एक विस्मयकारी अनुभव बना डाला।

इस कथा को लिखने को प्रेरित करने के लिए क्रिस बार्टन को शुक्रिया।

मेरे समालोचक साथियों डॉना जैनेल बोमैन व कारमेन ऑलिवर को शुक्रिया।

मेरे चित्रण समालोचकों द आर्मैडइलस्ट्रेटर्स: जैफ क्रासबी, क्रिस्टोफर एस. जैनिंग्स, थॉमस युंग, एरिक कुन्त्ज़, निक ऑल्टर तथा स्कॉट डुबॉएस को शुक्रिया।

डॉन टेट

डॉन टेट

डॉन टेट ने अनेक प्रसिद्ध बाल पुस्तकों को चित्रित किया है जिनमें *‘द अमेंज़िग एज ऑफ जॉन रॉय लिंच’, ‘द कार्ट दैट कैरिड मार्टिन’ तथा ‘होप्स गिफ्ट’* शामिल हैं। उन्हें 2013 में एज़रा कीटस् न्यू राइटर ऑनर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था जो उनकी पहली सचित्र पुस्तक *‘इट हैप्पन्ड वैन बिल टेलर स्टार्टेड टु ड्रा’* के लिए दिया गया था। वे टैक्सस में रहते हैं।